BARAH MADANI KAAM (HINDI)

दा'वते इस्लामी के ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी काम, मदनी कामों के अहदाफ़, मदनी कामों का त़रीक़ए कार, मदनी कामों की अहम्मिय्यत व फ़ज़ाइल पर रंग बिरंगे मदनी फूलों से मालामाल मदनी गुलदस्ता

बैरूने मुल्क के इस्लामी भाइयों के लिये

बारह मदनी काम

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

"बारह मदनी काम" का हिन्दी रस्मुल ख़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह रिसाला 'उर्दू' ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ٹھ	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, Mo. 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बारह मदनी काम

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : مَنْ صَلّٰى عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاحِدَةً जो शख़्स दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ेगा : صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ سَبْعِيْنَ صَلَاةً उस पर अल्लाह तआ़ला और उस के फ़िरिश्ते 70 मरतबा रह़मत भेजेंगे।[1]

रह़मत न किस त़रह़ हो गुनाहगार की त़रफ़
रह़मान ख़ुद है मेरे त़रफ़दार की त़रफ़[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत का मदनी सफ़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये हर दौर में ऐसे अफ़राद पैदा किये, जिन्हों ने न सिर्फ़ इस दीने मतीन (मज़बूत दीन) पर ख़ुद अ़मल किया, बल्कि

[1] .....مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۳/۵۹۹، حدیث: ۶۹۲۵

[2] .....ज़ौक़े ना'त, स. 111

www.dawateislami.net

दूसरों तक इस की ता'लीमात पहुंचाने और नेकी की दा'वत आ़म करने की भी भरपूर कोशिश फ़रमाई है मगर याद रखिये ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ पर क़ादिर है, वोह हरगिज़ हरगिज़ किसी का मोह़ताज नहीं, उस ने अपनी कुदरते कामिला से इस दुन्या को बनाया, इसे त़रह़ त़रह़ से सजा कर इस में इन्सानों को बसाया, फिर इन की हिदायत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन रुसुल व अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया (या'नी भेजा) । वोह अगर चाहे तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बिग़ैर भी बिगड़े हुवे इन्सानों की इस्लाह़ कर सकता है, लेकिन उस की मरज़ी कुछ इस त़रह़ है कि उस के बन्दे नेकी की दा'वत दें और उस की राह में मशक़्क़तें झेल कर बारगाहे आ़ली से बुलन्द दरजात पाएं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने रसूलों और नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नेकी की दा'वत के लिये दुन्या में भेजता रहा और आख़िर में अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मबऊ़स किया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिलसिलए नबुव्वत ख़त्म फ़रमाया। फिर येह अ़ज़ीमुश्शान मन्सब अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत के सिपुर्द किया कि ख़ुद ही आपस में एक दूसरे की इस्लाह़ करते रहें और नेकी की दा'वत के इस अहम फ़रीज़े को सर अन्जाम दें। चुनान्चे, मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी इनफ़िरादी कोशिश से इस्लाम की दा'वत को आ़म किया और इस काम में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भी जो इशाअ़ते इस्लाम में मुआ़वनत फ़रमाई वोह अपनी मिसाल आप है। मिसाल के त़ौर पर जब इस सर ज़मीन में नूरे इस्लाम की किरनें पहुंचीं कि अ़न क़रीब जिसे दारुल हिजरत, मदीनतुन्नबी और मदनी मर्कज़ बनने का शरफ़ ह़ासिल होने वाला था, तो वहां के रहने वालों ने बैअ़ते उ़क़्बए ऊला के बा'द हादिये आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में अ़र्ज़ की : कोई ऐसा मुबल्लिग़ इन के हां भेजा जाए, जो न सिर्फ़ इन के अ़लाक़े (Area) में नेकी की दा'वत आ़म करे, बल्कि लोगों को क़ुरआने करीम की ता'लीमात (Teachings) से भी आरास्ता करे। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को मुन्तख़ब (Select) फ़रमाया। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه नबुव्वत के ग्यारहवें साल ब मुत़ाबिक़ सिने 620 ईसवी को मदीनए मुनव्वरा पहुंचे और सिर्फ़ 12 माह के क़लील अ़र्से में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस बेहतरीन अन्दाज़ में नेकी की दा'वत आ़म की, कि मदीने शरीफ़ का कूचा कूचा और गली गली ज़िक्रे ख़ुदा और ज़िक्रे मुस्त़फ़ा के अन्वार से जग मगाने लगा। हर त़रफ़ दीने इस्लाम के चर्चे फैल गए। बच्चा हो या जवान, हर एक के दिल में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा

www.dawateislami.net

की शम्अ़ फ़रोज़ां (रौशन) हो गई । फिर ह़ज के मौसिम में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 70 अन्सार का एक मदनी क़ाफ़िला ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और यूं बैअ़ते उ़क़्बए सानिया में अन्सारे मदीना के शुरकाए क़ाफ़िला को दीदारे मुस्त़फ़ा की दौलत पा कर सह़ाबी होने का शरफ़ मिला ।[1]

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चर्चा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा ! दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम ! बहरे ख़ाके मदीना [2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इनफ़िरादी कोशिश का नतीजा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए जल्द इस्लाम की दा'वत मदीनए त़य्यिबा के घर घर में पहुंच गई, येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उस ह़द दरजा इनफ़िरादी कोशिश का नतीजा था, जो आप ने रात दिन जारी रखी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत को आ़म करने के लिये दिन रात की परवा किये बिग़ैर जब भी, जहां भी नेकी की दा'वत पेश करने के लिये जाना पड़ा, कभी भी सुस्ती से काम न लिया ।

सुन्नत है सफ़र दीन की तब्लीग़ की ख़ातिर
मिलता है हमें दर्स येह अस्फ़ारे नबी से [3]

1 .....طبقات کبریٰ، ۳۵- مصعب الخیر، ۳/۸۸

2 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 189

3 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 406

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नेकी की दा'वत का येह सफ़र यूं ही जारी व सारी है और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामे क़ियामत जारी रहेगा, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द जब भी प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत बे अ़मली के दलदल में फंसी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने किसी नेक बन्दे के ज़रीए उस की नजात की राहें पैदा फ़रमाईं। चुनान्चे, पन्दरहवीं सदी हिजरी में भी ह़ालात कुछ ऐसे ही हुवे तो इन नाज़ुक ह़ालात में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दा'वते इस्लामी के मदनी काम का आग़ाज़ किया। आप अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की मह़ब्बत में डूब कर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की इस्लाह़ की ख़ातिर चलते रहे और फिर देखते ही देखते आप के शबो रोज़ की कोशिशों, दुआ़ओं, ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा और इख़्लास व इस्तिक़ामत, हुस्ने अख़्लाक़ व शफ़्क़त, ग़म ख़्वारी व मिलन सारी की बरकत से मुसलमान मर्द व औ़रत बिल ख़ुसूस नौजवान जौक़ दर जौक़ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में शामिल होने लगे। बे नमाज़ी, नमाज़ी बने, चोर, डाकू, ज़ानी व क़ातिल, जुवारी व शराबी और दीगर जराइम पेशा अफ़राद ताइब हो कर मुआ़शरे के अच्छे अफ़राद बन कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में लग गए, दाढ़ी मुन्डाने वाले, अपने चेहरे पर मह़ब्बते

www.dawateislami.net

रसूल की निशानी सुन्नत के मुताबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी सजाने बल्कि ज़ुल्फ़ें रखने वाले बन गए, अग़यार की तरह नंगे सर फिरने वाले, सब्ज़ गुम्बद की यादों से माला माल सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाने लगे।

उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश में
वाह ! देखो तो सही लगता है कैसा शानदार (1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी का मदनी सफ़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की मदनी सोच, उम्मत के दर्द में सुलगते दिल और नेकी की दा'वत में ह़रीस त़बीअ़त का नतीजा है। आप की तड़प है कि हर मुसलमान ह़क़ीक़ी त़ौर पर ग़ुलामिये मुस्त़फ़ा का पट्टा अपने गले में डाल ले और सुन्नतों की चलती फिरती ऐसी तस्वीर नज़र आए कि उसे देख कर मदीने का वोह मन्ज़र याद आ जाए, जो मदीने के पहले मुबल्लिग़ या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رضی اللہ تعالٰی عنہ की नेकी की दा'वत से मुतअस्सिर हो कर मदीने में सरकारे वाला तबार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की आमद के मौक़अ़ पर नज़र आया था। या'नी जिस त़रह़ आमदे सरकार पर हर त़रफ़ खुशियों का सामां था, इमामे झन्डे बना कर लहराए जा रहे थे, हर त़रफ़ ज़बानों पर मह़ब्बत व अ़क़ीदत के तराने थे, इसी त़रह़ घर घर

1 .... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 221

www.dawateislami.net

में इश्क़े मुस्त़फ़ा की ऐसी शम्अ़ रौशन हो जाए कि जिस की रोशनी में राहे आख़िरत का हर मुसाफ़िर अपनी मन्ज़िल पर रवां दवां रहे और कभी रास्ते से भटके न कभी रास्ते की मुश्किलात व मसाइब से थक हार कर बैठे । दा'वते इस्लामी का जब आग़ाज़ हुवा तो अव्वलन न कोई शो'बा था न कोई दर्सी किताब, कोई मुबल्लिग़ था न कोई मुअ़ल्लिम मदनी मराकिज़ थे न मदारिस व जामिआ़त, बल्कि कोई काम करने का वाज़ेह़ त़रीक़ए कार तक मौजूद न था और अगर यूं कहा जाए कि **दा'वते इस्लामी ह़क़ीक़त में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **की ज़ाते वाह़िद का नाम था** तो बेजा न होगा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआओं, अन्थक कोशिशों, बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली और मज़बूत़ दस्तूरुल अ़मल का नतीजा है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मदनी तह़रीक, मुख़्तसर से अ़र्से में एक मुनज़्ज़म तन्ज़ीम की शक्ल इख़्तियार कर चुकी है, जिस की ज़ैली मुशावरतों ता मर्कज़ी मजलिसे शूरा, हज़ारों ज़िम्मादारान और दुन्या भर में लाखों लाख मुन्सलिक इस्लामी भाइयों का ठाठें मारता समन्दर नज़र आता है, लाखों लाख इस्लामी बहनें भी पर्दे में रह कर मदनी कामों में मसरूफ़े अ़मल हैं ।

मैं अकेला ही चला था जानिबे मन्ज़िल मगर
इक इक आता गया कारवां बनता गया

www.dawateislami.net

सब से पहला मदनी काम

सब से पहला मदनी काम, जिस से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **दा'वते इस्लामी** के मदनी काम का सिलसिला शुरूअ़ फ़रमाया, वोह हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ है, यहां से आप ने इजतिमाई और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ नेकी की दा'वत का सिलसिला बढ़ाया, फिर मसाजिदे अहले सुन्नत में दर्स का सिलसिला शुरूअ़ हुवा तो अव्वलन हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की मश्हूर तस्नीफ़ **मुकाशफ़तुल कुलूब** से दर्स दिया जाता रहा। फिर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने गोशए तन्हाई अपनाई और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत को बे शुमार सुन्नतों का मजमूआ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** की सूरत में अ़त़ा फ़रमाया। फिर **दा'वते इस्लामी** का मदनी काम बढ़ने की बरकत से मुख़्तलिफ़ शहरों में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त का इनइ़क़ाद शुरूअ़ हुवा। बाबुल मदीना कराची से उठने वाली मदनी तह़रीक देखते ही देखते बाबुल इस्लाम (सिन्ध), पंजाब, ख़ैबर पख़्तून ख़्वाह, कश्मीर, बलूचिस्तान और फिर हिन्द, बंग्लादेश, अ़रब इमारात, सीलंका, बरत़ानिया, ऑस्ट्रेलिया, कोरिया जैसे मुमालिक में मदनी कामों की मदनी बहारें लुटा रही है बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त तक दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम दुन्या के कमो बेश 200 मुमालिक तक पहुंच चुका है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब

दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब, ज़ैली ह़ल्क़े से शुरूअ़ हो कर मर्कज़ी मजलिसे शूरा तक है। **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस के बानी हैं।

दा'वते इस्लामी की आ़लीशान इ़मारत में **ज़ैली ह़ल्क़ा** इस की बुन्याद और **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** छत की ह़ैसिय्यत रखती है। दा'वते इस्लामी की मज़बूत़ी में अगर्चे इस के हर शो'बे का किरदार अपनी जगह अहम्मिय्यत का ह़ामिल है, मगर इस ह़क़ीक़त को हर आ़मो ख़ास जानता है कि इ़मारत की मज़बूत़ी बुन्याद की मज़बूत़ी पर मुन्ह़सिर है। चुनान्चे, बिल्कुल वाज़ेह़ है कि दा'वते इस्लामी में ज़ैली ह़ल्क़े की अहम्मिय्यत किस क़दर है, जिस क़दर ज़ैली ह़ल्क़ा मज़बूत़ होगा, उसी क़दर दा'वते इस्लामी मज़बूत़ और तरक़्क़ी के मज़ीद ज़ीने चढ़ती चली जाएगी और ज़ैली ह़ल्क़े की मज़बूत़ी, ज़ैली ह़ल्क़े में 12 मदनी कामों की मज़बूत़ी में है।

ज़ैली ह़ल्क़ा किसे कहते हैं ?

हर मस्जिद और उस के अत़राफ़ की आबादी, मसलन रिहाइशी मकानात, बाज़ार (Market), स्कूल (School), कॉलेज (Collage), सरकारी व सिविल इदारे (Government and Civil Organizations) वग़ैरा को तन्ज़ीमी त़ौर पर **ज़ैली ह़ल्क़ा** क़रार दिया जाता है। बा'ज़ अवक़ात (Some times) दा'वते इस्लामी की

www.dawateislami.net

मुतअ़ल्लिक़ा मुशावरत के निगरान किसी आबादी या इदारे वग़ैरा की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र उसे अलग से भी ज़ैली ह़ल्क़ा बना देते हैं।

ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत : ज़ैली ह़ल्क़े में दर्जे ज़ैल 3 ज़िम्मेदारान पर मुश्तमिल ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत बनाई जाती है।

(1) निगरान ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत

(2) ज़ैली ज़िम्मेदार मदनी क़ाफ़िला

(3) ज़ैली ज़िम्मेदार मदनी इन्आ़मात

मदीना : बा'ज़ ज़ैली ह़ल्क़ों में दा'वते इस्लामी के दीगर शो'बाजात के ज़ैली ज़िम्मेदारान भी अपने अपने शो'बाजात और मजालिस के तै़ कर्दा मदनी फूलों के मुत़ाबिक़ मदनी काम करते हैं, मगर वोह सब भी निगराने ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत के तह़त ही होते हैं।

ज़ैली ह़ल्क़े का मर्कज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** को दूसरे लफ़्ज़ों में **मस्जिद भरो तह़रीक** भी कहते हैं। क्यूंकि दा'वते इस्लामी का हर मदनी काम मस्जिदों को आबाद करने से मुतअ़ल्लिक़ है, येही वज्ह है कि ज़ैली ह़ल्क़े के तमाम मदनी कामों का मर्कज़ (Centre) भी मस्जिद ही को क़रार दिया गया, क्यूंकि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़्वाहिश है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर या'नी मसाजिद आबाद हो जाएं और उन की रोनक़ें पलट आएं,

www.dawateislami.net

मुसलमान एक बार फिर मसाजिद की त़रफ़ माइल हो जाएं, यक़ीनन मसाजिद की रोनक़, रंगो रोग़न (Colour), क़ालीन (Carpet), लाइट (Light) वग़ैरा से नहीं बल्कि नमाज़ियों और मो'तकिफ़ीन से है, तिलावत और ज़िक्र करने वालों से है, सुन्नतें सीखने और सिखाने वालों से है। कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जो नमाज़ व तिलावत, दर्सो बयान, ज़िक्रो ना'त वग़ैरा के ज़रीए मसाजिद की रोनक़ बढ़ाते हैं।

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब
सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्त़फ़ा (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मसाजिद की आबादकारी की अहम्मिय्यत

मसाजिद को आबाद करने के मुतअ़ल्लिक़ सूरए तौबह में इरशाद होता है :

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ (پ۱۰، التوبة:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाते।

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं : इस आयत में येह बयान किया गया कि मस्जिदों के

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 131

www.dawateislami.net

आबाद करने के मुस्तहिक़ मोमिनीन हैं। मस्जिदों के आबाद करने में येह उमूर भी दाख़िल हैं : झाड़ू देना, सफ़ाई करना, रोशनी करना और मस्जिदों को दुन्या की बातों से और ऐसी चीज़ों से महफ़ूज़ रखना जिन के लिये वोह नहीं बनाई गईं, मस्जिदें इबादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इल्म का दर्स भी ज़िक्र में दाख़िल है।[1]

दा'वते इस्लामी मस्जिद भरो तहरीक है मगर कैसे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जैली हल्क़े के 12 मदनी कामों का मेहवर मस्जिद की आबादकारी ही है।

मसलन **सदाए मदीना** लगा कर नमाज़े फ़ज्र के लिये लोगों को जगाना, ताकि वोह बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा करने की सआ़दत हासिल करें, इस के बा'द **मदनी हल्क़े** में शिर्कत फ़रमा कर कुरआन फ़हमी की बरकतें लूटें और जब रात को अपने काम काज से फ़ारिग़ हो कर घर वापस आएं तो नमाज़े इशा बा जमाअ़त मस्जिद में अदा करने के बा'द **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** में कुरआने करीम पढ़ें या पढ़ाएं। जो मसाजिद में आते हैं उन्हें ज़ेवरे इल्म से आरास्ता करने के लिये **मस्जिद दर्स** का एहतिमाम करें और जो नहीं आते उन के पास जा कर उन्हें **चौक दर्स** या **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** के ज़रीए मसाजिद में आने की तरग़ीब दिलाएं। हफ़्ते में एक दिन सुन्नतें सीखने

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 10, अत्तौबह, तहतुल आयत 18, हाशिया नम्बर 41, स. 357

www.dawateislami.net

सिखाने के लिये **हफ़्तावार इजतिमाअ़** के मौक़अ़ पर फिर मस्जिद में जम्अ़ हों और फिर भी अगर कुछ लोग किसी वज्ह से न आ सकें तो किसी मुनासिब जगह (ख़ारिजे मस्जिद) की तरकीब बना कर **हफ़्तावार मदनी ह़ल्क़ा** या फिर **मदनी मुज़ाकरों** के ज़रीए़ इन की मदनी तरबिय्यत करें। सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरों की बरकत से बहुत जल्द इन के दिलों में भी मसाजिद की मह़ब्बत पैदा हो जाएगी और येह मसाजिद में आने लगेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

हम जिस भी मदनी काम पर ग़ौर करें वोह मस्जिद की आबादकारी के ज़राएअ़ में से नज़र आएगा। अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) के बताए हुवे त़रीक़ों के मुत़ाबिक़ मुबल्लिग़ीन का मदनी कामों के ज़रीए़ मुसलमानों को नेकी की दा'वत देना और मसाजिद को आबाद करने की कोशिश करना अगर बारगाहे ख़ुदावन्दी में मक़्बूल हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से क्या बई़द कि हमारा करीम ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ हमें अपने मह़बूब और प्यारे बन्दों में शामिल फ़रमा ले। चुनान्चे,

ज़ैल में दो **फ़रामैने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये और मदनी कामों की पुख़्ता निय्यत कीजिये :

﴿1﴾ ☞ जो मस्जिद से मह़ब्बत करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मह़ब्बत करता है।[1]

[1] .....معجم اوسط، باب المیم، من اسمہ محمد، ۴/۴۰۰، حدیث: ۶۳۸۳

www.dawateislami.net

﴾2﴿ ☞ जो सुब्ह़ को या शाम को मस्जिद में गया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की जन्नत में मेहमानी (दा'वत) फ़रमाएगा।[1]

दा'वते इस्लामी का एक मदनी काम **यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़** और दूसरा **मदनी क़ाफ़िला** भी है। येह दोनों काम भी मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ हैं क्यूंकि ए'तिकाफ़ भी मस्जिद में होता है और मदनी क़ाफ़िला भी मस्जिद ही में ठहरता है, बल्कि मख़्सूस दिनों तक मदनी क़ाफ़िले के शुरका इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने की निय्यत से रात दिन रब तबारक व तआ़ला के घर में ठहरे रहते हैं, चुनान्चे, जो लोग अपने रब तबारक व तआ़ला की बारगाह में यूं ठहर जाते हैं उन के मुतअ़ल्लिक़ एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मा'सूम फ़िरिश्ते उन लोगों के हम नशीन होते हैं जो मसाजिद में पड़े रहते हैं, अगर येह लोग कभी मस्जिद से ग़ाइब हो जाएं तो फ़िरिश्ते इन्हें तलाश करते हैं और अगर बीमार हो जाएं तो इन की इ़यादत करते हैं और अगर इन को कोई ज़रूरत पेश आ जाए तो इन की मदद भी करते हैं।[2]

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मस्जिदें आबाद करने वाले न सिर्फ़ ढेरों सवाब लूटते हैं, बल्कि मस्जिद आबाद करने की बरकत से फ़िरिश्तों की मदद भी उन्हें ह़ासिल होती है, उन की तकालीफ़ व परेशानियां दूर और ह़ाजात पूरी होती हैं।

[1] ....مسلم، کتاب المساجد...الخ، باب المشی الی الصلاۃ...الخ، ص ۳۴۳، حدیث: ۶۶۹

[2] ....مستدرک، کتاب التفسیر، ان للمساجد اوتادا...الخ، ۳/۱۶۲، حدیث: ۳۵۵۹ مفهومًا

www.dawateislami.net

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब
सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्तफ़ा (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से चूंकि कई मसाजिद के ताले खुले तो कई मसाजिद में पन्ज वक़्ता बा जमाअ़त नमाज़ शुरूअ़ हुई और कई मसाजिद जामेअ़ मस्जिद में तब्दील हुईं, या'नी वहां नमाज़े जुमुआ़ की तरकीब शुरूअ़ हुई, लिहाज़ा अहले सुन्नत की मसाजिद को आबाद करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी काम इन्तिहाई अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं, इन 12 मदनी कामों की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अहले सुन्नत की मसाजिद में मदनी बहारें आ जाएंगी। आइये देखते हैं कि येह 12 मदनी काम क्या हैं ? और हम ने किस त़रह़ करने हैं और इन में दीगर इस्लामी भाइयों को किस त़रह़ शामिल करना है ?

बारह मदनी कामों की मुख़्तसर वज़ाह़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हर इस्लामी भाई का मदनी मक़्सद येह है कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 131

www.dawateislami.net

चुनान्चे, इस **मदनी मक़्सद** के हुसूल के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ ने ज़ैली ह़ल्क़े के जो 12 मदनी काम दिये हैं, दिनों के ए'तिबार से अगर इन का जाइज़ा लिया जाए तो इन की तरतीब कुछ यूं बनती है :

रोज़ाना के पांच मदनी काम :

﴾1﴿ सदाए मदीना ﴾2﴿ बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा

﴾3﴿ मस्जिद दर्स ﴾4﴿ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान

﴾5﴿ चौक दर्स

हफ़्तावार पांच मदनी काम :

﴾6﴿ हफ़्तावार इजतिमाअ़ ﴾7﴿ यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़

﴾8﴿ हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा ﴾9﴿ हफ़्तावार मदनी ह़ल्क़ा

﴾10﴿ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत

माहाना दो मदनी काम :

﴾11﴿ मदनी क़ाफ़िला ﴾12﴿ मदनी इन्आ़मात

आइये ! इन तमाम मदनी कामों का एक मुख़्तसर जाइज़ा लेते हैं :

रोज़ाना के पांच मदनी काम

﴾1﴿ सदाए मदीना

(**हदफ़ :** फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा कम अज़ कम चार इस्लामी भाई)

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसलमानों को जगाना **सदाए मदीना** कहलाता है और येह सुन्नत से साबित है।

www.dawateislami.net

जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह (ह़ज़रते सय्यिदुना नक़ीअ़ बिन ह़ारिस सक़फ़ी) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े फ़ज्र के लिये निकला तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सोते हुवे जिस शख़्स पर भी गुज़रते उसे नमाज़ के लिये आवाज़ देते या पाउं मुबारक से हिलाते।[1]

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) में येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : जो ख़ुश नसीब **सदाए मदीना** लगाते हैं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अदाए सुन्नत** का सवाब पाते हैं। याद रहे ! पाउं से हिलाने की सब को इजाज़त नहीं। सिर्फ़ वोह बुज़ुर्ग पाउं से हिला सकते हैं कि जिस से सोने वाले की दिल आज़ारी न होती हो। हां अगर कोई मानेए़ शरई न हो तो अपने हाथों से पाउं दबा कर जगाने में ह़रज नहीं। यक़ीनन हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर अपने किसी ग़ुलाम को मुबारक पाउं से हिला दें तो उस के सोए नसीब जगा दें और किसी ख़ुश बख़्त के सर, आंखों या सीने पर अपना मुबारक क़दम रख दें तो ख़ुदा की क़सम ! कौनैन का चैन बख़्श दें।

एक ठोकर में उहुद का ज़लज़ला जाता रहा
रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अकबर एड़ियां

[1] .... ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب الاضطجاع بعدھا، ص۲۰۸، حدیث: ۱۲۶۴

www.dawateislami.net

येह दिल येह जिगर येह आंखें येह सर है

जिधर चाहो रखो क़दम जाने आ़लम[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदाए मदीना लगाना (या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना) इस क़दर प्यारी सुन्नत है कि खुलफ़ाए राशिदीन में से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने येह सुन्नत अदा करते हुवे अपनी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द की। जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 864 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 757 पर है : बा'ज़ रिवायात में है कि (अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते) सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने घर से जब (भी) नमाज़े फ़ज्र के लिये निकलते तो सदाए मदीना लगाते हुवे निकलते, या'नी रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते, अबू लुअ लुअ रास्ते में ही छुपा और उस ने मौक़अ़ देख कर आप पर ख़न्जर के तीन क़ातिलाना वार कर दिये, जो मोहलिक साबित हुवे।[2]

इसी त़रह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शहादत का वाक़िआ़ बयान करते हुवे इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि :

1 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, 1/38

2 ..... طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ۳/ ۲۶۳

www.dawateislami.net

मुअज़्ज़िन ने आ कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को वक़्ते नमाज़ की इत्तिलाअ़ दी, तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه नमाज़े फ़ज्र पढ़ाने के लिये घर से चले, रास्ते भर लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ लगा कर जगाते जा रहे थे कि इब्ने मुल्जम ख़बीस ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर अचानक तल्वार का भरपूर वार किया जिस से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शदीद ज़ख़्मी हो गए और बा'द में ज़ख़्मों की ताब न लाते हुवे जामे शहादत नोश फ़रमा गए।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सदाए मदीना के चन्द मदनी फूल

﴿1﴾ ☞ सदाए मदीना शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ना'तिय्या कलाम वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम) के सफ़ह़ा 665 के मुत़ाबिक़ ही लगाएं, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली की निगाह और दुआ़ के साथ साथ तह़रीर में भी असर होता है।

﴿2﴾ ☞ सदाए मदीना के लिये मेगाफ़ोन (Megaphone) का इस्ति'माल न करें।

﴿3﴾ ☞ इस्लामी भाइयों की ता'दाद ज़ियादा होने की सूरत में मुख़्तलिफ़ समतों में दो-दो इस्लामी भाई भेज दिये जाएं।

[1] ..... تاریخ الخلفاء، علی بن ابی طالب، فصل فی مبایعۃ علی بالخلافۃ...الخ، ص ۱۱۲ ماخوذًا

www.dawateislami.net

﴾4﴿ ☞ अगर कोई इस्लामी भाई न आए तो अकेले ही सदाए मदीना की सआ़दत ह़ासिल करें।

﴾5﴿ ☞ सदाए मदीना अज़ाने फ़ज्र के बा'द शुरूअ़ की जाए।

﴾6﴿ ☞ जहां कहीं जानवर वग़ैरा बन्धे हों वहां आवाज़ क़दरे कम होनी चाहिये।

﴾7﴿ ☞ सदाए मदीना से फ़ारिग़ हो कर मस्जिद में इतनी देर पहले पहुंचें कि सुन्नते क़ब्लिया इक़ामत से क़ब्ल और तक्बीरे ऊला व सफ़े अव्वल पा सकें।

﴾8﴿ ☞ सदाए मदीना से क़ब्ल ही इस्तिन्जा और वुज़ू से फ़ारिग़ हो लें।

﴾9﴿ ☞ फ़ज्र में उठाने के लिये तरग़ीब और नाम लिखने की तरकीब भी की जाए।

﴾10﴿ ☞ जो इस्लामी भाई नाम लिखवाएं उन के दरवाज़े पर दस्तक दें या बेल (Bell) भी बजाएं।

﴾11﴿ ☞ किसी भी मो'तरिज़ या झगड़ालू से न झगड़ें, न उलझें।

﴾12﴿ ☞ अज़ाने फ़ज्र से इतनी देर पहले उठें कि आप ब आसानी फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ होने से क़ब्ल इस्तिन्जा व वुज़ू और तहज्जुद से फ़ारिग़ हो सकें।

﴾13﴿ ☞ वक़्ते मुनासिब पर उठने के लिये अलार्म (Alarm), घर के किसी बड़े, चौकीदार या किसी इस्लामी भाई को जगाने का कहने की तरकीबें करें। शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या

www.dawateislami.net

ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या में सफ़ह़ा नम्बर 32 पर है कि सूरए कह्फ़ की आख़िरी चार आयतें या'नी اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا से ख़त्मे सूरह तक। रात में या सुब्ह़ जिस वक़्त जागने की निय्यत से पढ़ें, आंख खुलेगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴿14﴾ ☞ अपने घर के अफ़राद नीज़ काम काज के सिलसिले में फ़्लेट्स वग़ैरा में रिहाइश पज़ीर इस्लामी भाई अपने साथ रहने वालों इसी त़रह़ कॉलिज, यूनिवर्सिटी में दौराने ता'लीम होस्टेल वग़ैरा में क़ियाम पज़ीर इस्लामी भाई साथी त़लबा को भी नर्मी और मह़ब्बत के साथ नमाज़े फ़ज्र के लिये बेदार करें।

﴿15﴾ ☞ जिन अ़लाक़ों में किसी वज्ह से बा आवाज़े बुलन्द सदाए मदीना लगाना और दरवाज़ों पर दस्तक दे कर जगाना मुमकिन न हो, वहां पर भी फ़ोन या इन्टरनेट कॉल के ज़रीए इस्लामी भाइयों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाएं।

गली में सदाए मदीना का त़रीक़ा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ कर दुरूदो सलाम के ज़ैल में दिये हुवे सीग़े पढ़ कर इस के बा'द वाला मज़मून दोहराते रहिये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो और इस्लामी बहनो ! फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त हो गया है। सोने से नमाज़ बेहतर है। जल्दी जल्दी उठिये और नमाज़ की तय्यारी कीजिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को बार बार ह़ज नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए।

(मौक़ए की मुनासबत से नीचे दी हुई नज़्म में से मुन्तख़ब अश्आ़र भी पढ़िये)

www.dawateislami.net

(रमज़ानुल मुबारक में सहरी के लिये उठाएं तो तहज्जुद की भी तरग़ीब दिलाएं)

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठो ! ऐ ग़ुलामाने मुस्तफ़ा उठो !
जागो जागो ऐ भाइयो, बहनो ! छोड़ दो अब तो बिस्तरा उठो !
तुम को हज की ख़ुदा सआ़दत दे जल्वा देखो मदीने का उठो !
उठो ज़िक्रे ख़ुदा करो उठ कर दिल से लो नामे मुस्तफ़ा उठो !
फ़ज्र की हो चुकी अज़ानें वक़्त हो गया है नमाज़ का उठो !
भाइयो ! उठ कर अब वुज़ू कर लो और चलो ख़ानए ख़ुदा उठो !
नींद से तो नमाज़ बेहतर है ! अब न मुत्लक़ भी लेटना उठो !
उठ चुको अब खड़े भी हो जाओ ! आंख शैतां न दे लगा उठो !
जागो जागो नमाज़ ग़फ़्लत से कर न बैठो कहीं क़ज़ा उठो !
अब "जो सोए नमाज़ खोए" वक़्त सोने का अब नहीं रहा उठो !
याद रखो ! नमाज़ गर छोड़ी क़ब्र में पाओगे सज़ा उठो !
बे नमाज़ी फंसेगा महशर में होगा नाराज़ किब्रिया उठो !
मैं "सदाए मदीना" देता हूं तुम को तयबा का वासिता उठो !
मैं भिकारी नहीं हूं दर दर का मैं हूं सरकार का गदा उठो !
मुझ को देना न पाई पैसा तुम ! मैं हूं तालिब सवाब का उठो !
तुम को देता है येह दुआ अत्तार फ़ज़्ल तुम पर करे ख़ुदा उठो ! (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा

(**हदफ़ :** फ़ी ज़ैली हल्क़ा कम अज़ कम शुरका 12 इस्लामी भाई)

बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा : से मुराद रोज़ाना बा'दे फ़ज्र ता इशराक़ व चाश्त कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ से तीन आयात, तर्जमए

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 665 ता 667

www.dawateislami.net

कन्ज़ुल ईमान और तफ़्सीरे सिरातुल जिनान / ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / नूरुल इरफ़ान से देख कर सुनाना, फ़ैज़ाने सुन्नत से तरतीब वार चार सफ़्हात का दर्स, मन्ज़ूम शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, अवरादो वज़ाइफ़ और इजतिमाई फ़िक्रे मदीना करना (या'नी मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करना) है ।

ऐ काश ! मुबल्लिग़ मैं बनूं दीने मुबीं का
सरकार ! करम अज़ पए ह़स्साने मदीना (1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत से तिलावते क़ुरआने पाक, तर्जमा व तफ़्सीर, फ़ैज़ाने सुन्नत के चार सफ़्हात का दर्स, अवरादो वज़ाइफ़, औलियाए किराम के तज़्किरों से मा'मूर शजरा शरीफ़ पढ़ने सुनने की सआ़दत पा कर दिन का आग़ाज़ करना कितना बा बरकत होगा ! गोया कि **बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा** उमूरे ख़ैर का मजमूआ़ है ।

जो नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा करने के बा'द ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ रहे, यहां तक कि सूरज बुलन्द हो जाए और दो रक्अ़त पढ़े, उस के लिये तो ख़ास फ़ज़ीलत भी है । जैसा कि मरवी है कि जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा कर के ज़िक्रुल्लाह करता रहे, यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो जाए फिर दो रक्अ़तें पढ़े तो उसे पूरे ह़ज व उ़मरह का सवाब मिलेगा ।(2) एक और जगह इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ होने के बा'द अपने मुसल्ले में

1 .... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 364

٢ ....ترمذی، ابواب السفر، باب ماذکر مما یستحب من الجلوس...الخ، ص١٧١، حدیث:٥٨٦

www.dawateislami.net

(या'नी जहां नमाज़ पढ़ी वहीं) बैठा रहा ह़त्ता कि इशराक़ के नफ़्ल पढ़ ले, सिर्फ़ ख़ैर ही बोले तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे, अगर्चे समन्दर के झाग से भी ज़ियादा हों।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **अपने मुसल्ले में बैठा रहे** की वज़ाह़त करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिद या घर में इस ह़ाल में रहे कि ज़िक्र या ग़ौरो फ़िक्र करने या इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने या बैतुल्लाह के त़वाफ़ में मशग़ूल रहे, नीज़ **सिर्फ़ ख़ैर ही बोले** के बारे में फ़रमाते हैं : या'नी फ़ज्र और इशराक़ के दरमियान ख़ैर या'नी भलाई के सिवा कोई गुफ़्तगू न करे, क्यूंकि येह वोह बात है जिस पर सवाब मुरत्तब होता है।(2)

मदनी फूल : निगराने ज़ैली मुशावरत / ज़ैली ज़िम्मेदार मदनी इन्आ़मात रोज़ाना **बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े** की तरकीब फ़रमाएं, नीज़ ज़ैली मुशावरत आज के मदनी कामों के लिये मश्वरा करे। (बा'दे फ़ज्र मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की भी तरकीब हो सकती है)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ मस्जिद दर्स

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की चन्द कुतुबो रसाइल के इ़लावा बाक़ी तमाम कुतुबो रसाइल बिल ख़ुसूस

[1] ..... ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضحی، ص۲۱۱، حدیث: ۱۲۸۷

[2] ..... مرقاۃ، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الضحی، الفصل الثانی، ۳/۳۵۸، تحت الحدیث: ۱۳۱۷ ملتقطاً

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने सुन्नत से मस्जिद में दर्स देने को तन्ज़ीमी इस्तिलाह में **मस्जिद दर्स**[1] कहते हैं। **मस्जिद दर्स** भी फ़रोगे़ इल्मे दीन की ही एक कड़ी है जिस के लिये तक़रीबन हर मस्जिद में रोज़ाना कम अज़ कम एक **मदनी दर्स**[2] की तरकीब बनाने की कोशिश की जाती है। मस्जिद में इजाज़त न होने की सूरत में इन्तिज़ामिया, ख़तीबो इमाम व मुअज़्ज़िन वग़ैरा की मुख़ालफ़त किये बिग़ैर बाहर दर्स दिया जाता है।

सआ़दत मिले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत
की रोज़ाना दो मरतबा या इलाही [3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 .....**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल से **मदनी दर्स** दिया जाए, अलबत्ता ! बा'ज़ कुतुबो रसाइल से दर्स देने की इजाज़त नहीं, उन में से चन्द एक येह हैं : ﴾1﴿ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब ﴾2﴿ 28 कलिमाते कुफ़्र ﴾3﴿ गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र ﴾4﴿ पर्दे के बारे में सुवाल जवाब ﴾5﴿ चन्दे के बारे में सुवाल जवाब ﴾6﴿ अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब ﴾7﴿ इस्तिन्जा का त़रीक़ा ﴾8﴿ नमाज़ के अह़काम ﴾9﴿ इस्लामी बहनों की नमाज़ ﴾10﴿ ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी ﴾11﴿ ना'त ख़्वां और नज़राना ﴾12﴿ क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां ﴾13﴿ कपड़े पाक करने का त़रीक़ा मअ़ नजासतों का बयान ﴾14﴿ रफ़ीकुल ह़रमैन ﴾15﴿ रफ़ीकुल मो'तमिरीन ﴾16﴿ ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल।

2 ..... **मदनी दर्स** से मुराद शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की चन्द एक कुतुब के इलावा बाक़ी तमाम कुतुबो रसाइल से दर्स की तरकीब बनाना है। नीज़ याद रखिये कि शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स देने की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की त़रफ़ से इजाज़त नहीं।

3 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 103

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰہِ शरीफ़ के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद दर्स के ﴿19﴾ मदनी फूल

﴿1﴾ ☞ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।[1]

﴿2﴾ ☞ **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।"[2]

﴿3﴾ ☞ ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक नाम की एक ह़िक्मत येह भी है कि आप عَلَیْہِ السَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ाकर्दा सह़ीफ़े लोगों को कसरत से सुनाया करते थे। लिहाज़ा आप عَلَیْہِ السَّلَام का नाम ही इदरीस (या'नी दर्स देने वाला) हो गया।[3]

﴿4﴾ ☞ हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

"دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا" (या'नी मैं इ़ल्म का दर्स लेता रहा, यहां तक कि मक़ामे कुत़बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया)[4]

---

[1] ..... حلیۃ الاولیاء، ۱۰/۴۵، رقم: ۱۴۴۶۶

[2] ..... ترمذی، ابواب العلم، باب ماجاء فی الحث... الخ، ص ۶۲۶، حدیث: ۲۶۵۶، ملتقطًا

[3] ..... تفسیر بغوی، پارہ ۱۶، مریم، تحت الآیۃ: ۳، ۵۶/۹۱

[4] ..... मदनी पन्ज सूरह, क़सीदए ग़ौसिय्या, स. 264

www.dawateislami.net

﴾5﴿ ☞ रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये ।

﴾6﴿ ☞ पारह 28 सूरतुत्तह़रीम की छटी आयत में इरशाद होता है : يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ) अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ **मदनी दर्स** भी है ।

﴾7﴿ ☞ दर्स के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें ।

﴾8﴿ ☞ दर्स वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तकबीरे ऊला के साथ **बा जमाअ़त** अदा फ़रमाइये ।

﴾9﴿ ☞ मेह़राब से हट कर (सेह्न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो ।

﴾10﴿ ☞ निगराने जैली मुशावरत को चाहिये कि अपनी मस्जिद में दो ख़ैर ख़्वाह मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नर्मी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं ।

﴾11﴿ ☞ पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर दर्स दीजिये । अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं, जब कि नमाज़ियों वग़ैरा को तशवीश न हो ।

www.dawateislami.net

﴾12﴿ ☞ आवाज़ ज़ियादा बुलन्द हो न बिलकुल आहिस्ता ह़त्तल इमकान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये कि सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। बहर सूरत नमाज़ियों को तक्लीफ़ नहीं होनी चाहिये।

﴾13﴿ ☞ दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

﴾14﴿ ☞ जो कुछ दर्स देना है, पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ालआ़ कर लीजिये ताकि ग़लति़यां न हों।

﴾15﴿ ☞ मुअ़र्रब अलफ़ाज़ (या'नी जिन लफ़्ज़ो पर ज़बर, ज़ेर, और पेश वग़ैरा लिखा हुवा है उन को) ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये, इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

﴾16﴿ ☞ ह़म्दो सलात, दुरूदो सलाम के चारों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्ति़तामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें, अकेले में अपने त़ौर पर भी न पढ़ा करें।

﴾17﴿ ☞ दर्स मअ़ इख़्ति़तामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

﴾18﴿ ☞ हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह दर्स का त़रीक़ा, बा'द की तरग़ीब और इख़्ति़तामी दुआ़ ज़बानी याद कर ले।

﴾19﴿ ☞ दर्स के त़रीक़े में इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

www.dawateislami.net

है तुझ से दुआ रब्बे अक्बर ! मक़्बूल हो "फ़ैज़ाने सुन्नत"
मस्जिद मस्जिद घर घर पढ़ कर, इस्लामी भाई सुनाता रहे[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिद में दर्स देने के मक़ासिद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ब क़दरे ज़रूरत इल्मे दीन सीखना, चूंकि हर मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है, लिहाज़ा ज़रूरी इल्मे दीन से रू शनास होने के लिये मदनी दर्स एक बहुत बड़ा ज़रीआ है,

चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 696 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **नेक बनने और बनाने के त़रीक़े** सफ़ह़ा 197 पर **मस्जिद दर्स के** मक़ासिद कुछ यूं मज़कूर हैं :

﴿1﴾ ☞ दर्स देने का सब से बड़ा मक़सद **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की रिज़ा है।

﴿2﴾ ☞ **मदनी दर्स** के ज़रीए शुरकाए दर्स और अहले मह़ल्ला को अहले मह़ब्बत बल्कि ह़क़ीक़ी मा'नों में **"दा'वते इस्लामी"** वाला बनाना है।

﴿3﴾ ☞ मस्जिद में मदनी दर्स के शुरका के ज़रीए हफ़्ते में एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की तरकीब बनानी है।

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 475

www.dawateislami.net

﴾4﴿ ☞ मदनी दर्स में शुरकाए दर्स को मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने की तरग़ीब दिलानी है और उन को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने और करवाने का ज़ेहन भी देना है।

﴾5﴿ ☞ हफ़्तावार इजतिमाअ़ और हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे में पाबन्दिये वक़्त से अव्वल ता आख़िर शिर्कत के लिये तय्यार करना है।

﴾6﴿ ☞ मस्जिद के इमाम साहिब और कमेटी वालों को भी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर आमादा करना है।

﴾7﴿ ☞ मस्जिद सत्ह़ पर सदाए मदीना की तरकीब भी बनानी है।

﴾8﴿ ☞ मस्जिद सत्ह़ पर हर रोज़ मुलाक़ात के लिये फ़ज्र के बा'द मदनी ह़ल्क़ा शुरूअ़ करना है और मस्जिद के अत्राफ़ में जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते उन्हें नमाज़ की तरग़ीब भी दिलानी है।

﴾9﴿ ☞ मस्जिद के क़ुर्बो जवार में पुराने इस्लामी भाइयों में से जो पहले आते थे अब नहीं आते उन से मुलाक़ात कर के उन्हें मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलानी है।

﴾10﴿ ☞ शुरकाए दर्स को "**दा'वते इस्लामी**" का मुबल्लिग़ व मुअ़ल्लिम बनाना है।

﴾11﴿ ☞ मस्जिद के क़रीब चौक दर्स की तरकीब बनानी है।

﴾12﴿ ☞ मस्जिद में मद्रसतुल मदीना बालिग़ान का सिलसिला शुरूअ़ करना और इसे मज़बूत करना है।

www.dawateislami.net

इलाही हर मुबल्लिग़ पैकरे इख़्लास बन जाए

करम हो दा'वते इस्लामी वालों पर करम मौला (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये :

''क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये''

पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये :

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف

(**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

फिर इस त़रह़ कहिये : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 99

www.dawateislami.net

जाइये, अगर थक जाएं तो जिस त़रह़ आप को आसानी हो उसी त़रह़ बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ **मदनी दर्स** सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुवे, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुवे, लिबास, बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुवे सुनने से इस की बरकतें ज़ाइल होने का अन्देशा है।

(बयान के आग़ाज़ में भी इसी अन्दाज़ में तरग़ीब दिलाइये)

येह कहने के बा'द फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरा से देख कर दुरूद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़रबी इ़बारात का सिर्फ़ तर्जमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस का अपनी राए से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये !

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी व बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। (अपने यहां के हफ़्तावार इजतिमाअ़ का ए'लान इस त़रह़ कीजिये मसलन बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

वाले कहें) हर जुमा'रात को फ़ैज़ाने मदीना महल्ला सौदा गरान पुरानी सब्ज़ी मन्डी में मग़रिब की नमाज़ के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेहन बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो[1]

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315

www.dawateislami.net

आख़िर में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (ख़ुशूअ़ या'नी बदन की आ़जिज़ी और ख़ुज़ूअ़ या'नी दिलो दिमाग़ की ह़ाज़िरी) के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुवे बिला कमी व बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ !

ब त़ुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दर्स की ग़लतियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा। नेक अ़मल का जज़्बा दे, हमें परहेज़गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपना और अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुख़्लिस आ़शिक़ बना। हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दूसरों को भी मदनी कामों की तरग़ीब दिलाने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुसलमानों को बीमारियों, क़र्ज़ दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, बे जा मुक़द्दमे बाज़ियों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़त़ा फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस्लाम का बोल बाला कर और

www.dawateislami.net

दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासिता हमारी जाइज़ दुआएं क़बूल फ़रमा।

कहते रहते हैं दुआ के वासिते बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की[1]

اٰمِين بِجاہِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शे'र के बा'द येह आयते मुबारका पढ़िये :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾

(پ۲۲، الاحزاب: ۵۶)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾

(پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۱۸۰تا۱۸۲)

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 96

www.dawateislami.net

दर्स की कमाई पाने के लिये (खड़े खड़े नहीं बल्कि) बैठ कर ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब बिठा लीजिये और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए उन्हें मदनी इन्आ़मात और मदनी क़ाफ़िलों की बरकतें समझाइये। *(बैठ कर मिलने में हिक्मत येह है कि कुछ न कुछ इस्लामी भाई हो सकता है आप के साथ बैठे रहें वरना खड़े खड़े मिलने वाले उ़मूमन चल पड़ते हैं, यूं इनफ़िरादी कोशिश की सआ़दत से महरूमी हो सकती है)*

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ़ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना[1]

दुआ़ए अ़त्तार : *या* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! मुझे और पाबन्दी के साथ रोज़ाना कम अज़ कम दो मदनी दर्स एक घर में और दूसरा मस्जिद, चौक या स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़फ़िरत फ़रमा और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना ।*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान

(**हदफ़ :** फ़ी जै़ली ह़ल्क़ा कम अज़ कम एक मद्रसा, **शुरका :** 19 इस्लामी भाई, दौरानिय्या 41 मिनट)

दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में रोज़ाना हर जै़ली ह़ल्क़े में बालिग़ इस्लामी भाइयों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ कु़रआने करीम पढ़ाने का सिलसिला होता है, जिसे **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** कहते हैं ।

[1] .... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 371

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआन अ़रबी ज़बान (Arabic language) में अ़रबी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा । रसूले अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे अ़रबी लबो लहजे में पढ़ने का हुक्म कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : اِقْرَؤُوا الْقُرْاٰنَ بِلُحُوْنِ الْعَرَبِ या'नी कुरआन को अ़रबी लबो लहजे में पढ़ो ।(1) मगर बद क़िस्मती ! मख़ारिज की दुरुस्ती के साथ अ़रबी लबो लहजे में अब कुरआने करीम पढ़ने वाले बहुत ही कम हैं । ح और ه, ذ، ز، ظ، ض और ث، س، ص और ع और ء, में फ़र्क़ कर के पढ़ने वाले बहुत ही कम हैं । याद रखिये ! दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआन पढ़ना फ़र्ज़ है, लह़्ने जली (या'नी ह़र्फ़ को ह़र्फ़ से बदलने की वज्ह) से अगर मा'ना फ़ासिद हो जाएं, तो नमाज़ भी फ़ासिद हो जाती है । चुनान्चे, येही वज्ह है कि वोह इस्लामी भाई जो दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम पढ़ना नहीं जानते, उन्हें **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** के तह़त दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने का एहतिमाम किया जाता है । क्यूंकि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : خَيْرُكُمْ مَّنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ या'नी तुम में सब से बेहतर वोह है, जिस ने कुरआन की ता'लीम ह़ासिल की और दूसरों को इस की ता'लीम दी ।(2)

---

1 .... نوادر الاصول، الاصل الثالث والخمسون والمائتان فی ان القران مثله...الخ، ۲/ ۲۴۲

2 .... بخاری، کتاب فضائل القران، باب خیر کم من...الخ، ص۱۲۹۹، حدیث: ۵۰۲۷

www.dawateislami.net

मदनी फूल : बा'दे इ़शा या बा'दे फ़ज्र मस्जिद या किसी भी मक़ाम पर रोज़ाना **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** की तरकीब होनी चाहिये, अगर ज़ैली ह़ल्क़ों में **मद्रसतुल मदीना बालिग़ान** मज़बूत़ हो जाएं तो 12 मदनी कामों की मदनी बहारें आ सकती हैं (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये "मद्रसतुल मदीना बालिग़ान के 29 मदनी फूल" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं)

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ चौक दर्स

मस्जिद और घर के इ़लावा जिस भी मक़ाम (चौक, बाज़ार, स्कूल, कॉलेज, इदारे वग़ैरा) पर जो **मदनी दर्स** दिया जाता है उसे दा'वते इस्लामी की इस्ति़लाह़ में **चौक दर्स** कहते हैं। **चौक दर्स का मक़्सद** ऐसे अफ़राद को नेकी की दा'वत पहुंचाना है जो मसाजिद में नहीं आते ताकि वोह भी मस्जिद में आने वाले, बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने वाले बन जाएं और दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम क़बूल कर के राहे सुन्नत पर गामज़न हो जाएं।

मस्जिद से बाहर मुनासिब मक़ाम पर इ़ल्मे दीन के दर्स की मिसाल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुबारक ज़माने से भी मिलती है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नस्र बिन मुह़म्मद बिन इब्राहीम समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने अपनी किताब तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 102

www.dawateislami.net

नक़्ल फ़रमाया है कि मुझे फ़ुक़हाए किराम की एक जमाअ़त ने येह बात बताई कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ह़ुकूमत में एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना सुमैर अस्बह़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मदीना शरीफ़ زَادَھَا اللّٰہُ شَرْفًا وَّ تَعْظِیْمًا में ह़ाज़िर हुवे तो क्या देखते हैं कि एक जगह लोगों का ख़ूब हुजूम है, किसी से पूछा कि क्या माजिरा है ? तो बताने वाले ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़दीसे पाक का दर्स दे रहे हैं। चुनान्चे, आप ने भी आगे बढ़ कर इ़ल्म के उस समन्दर से अपना ह़िस्सा वुसूल किया।[1]

मदनी फूल : घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **चौक दर्स** का एहतिमाम करें। मसलन रात नौ बजे मदीना चौक, (साढ़े नौ बजे) बग़दादी चौक में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर **चौक दर्स** का एहतिमाम कीजिये, मगर ह़ुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों मसलन किसी मुसलमान या जानवर वग़ैरा का रास्ता न रुके वरना गुनाहगार होंगे।

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत (जदीद) से **"दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 मदनी फूल"** मुलाह़ज़ा फ़रमाएं)

जो दे रोज़ दो[2] दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत
मैं देता हूं उस को दुआए मदीना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1] ..... تنبیہ الغافلین، باب الاخلاص، ص ۶ ملتقطًا

www.dawateislami.net

हफ़्तावार पांच मदनी काम

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي मिन्हाजुल आ़बिदीन में फ़रमाते हैं : मुसलमानों की इजतिमाई इबादत से दीन को तक़्विय़त पहुंचती है, इस्लाम का जमाल ज़ाहिर होता है और कुफ़्फ़ार व मुल्हिदीन (बे दीन) मुसलमानों का इजतिमाअ़ देख कर जलते हैं और जुमुआ़ वग़ैरा दीनी इजतिमाआ़त पर अल्लाह तआ़ला की बरकतें और रह़मतें नाज़िल होती हैं, लिहाज़ा गोशा नशीन शख़्स पर लाज़िम है कि जुमुआ़, जमाअ़त व दीनी इजतिमाआ़त में आ़म मुसलमानों के साथ शरीक रहे।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों के इजतिमाआ़त इस्लाम की शानो शौकत का मज़हर ही नहीं बल्कि शरई अह़काम सीखने का भी एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ हैं और इन के लिये अगर कोई ख़ास दिन मुतअ़य्यन कर लिया जाए तो हर शख़्स के लिये इस एक दिन जम्अ़ होना भी मुमकिन है। मसलन जब मदीने में इस्लाम का पैग़ाम आ़म हुवा और शहर व अत़राफ़ से लोग जौक़ दर जौक़ दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे नबुव्वत से नमाज़े जुमुआ़ क़ाइम करने का हुक्म इरशाद हुवा[2] ताकि वोह इस दिन जम्अ़ होने वाले तमाम अफ़राद को इजतिमाई त़ौर पर इस्लामी अह़कामात सिखाएं। इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी जुमा'रात का दिन लोगों को वा'ज़ो नसीह़त के लिये मख़्सूस कर रखा था।[3]

[1] ..... منهاج العابدين، العقبة الثالثه، العائق الثانی: الخلق، ص ۱۲۴ ملخصًا

[2] ..... البداية والنهاية، باب بدء اسلام الانصار، المجلد الثانی، ۳/ ۱۶۳

[3] ..... بخاری، کتاب العلم، باب من جعل لاهل العلم ایاما معلومة، ص ۹۱، حدیث: ۷۰

www.dawateislami.net

चुनान्चे, वा'ज़ो नसीह़त के इसी सिलसिले को जारी रखते हुवे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में हफ़्तावार इजतिमाआ़त की तरकीब कुछ यूं बनाई गई है :

﴾6﴿ हफ़्तावार इजतिमाअ़

(**हदफ़ :** फ़ी ज़ैली ह़ल्क़ा कम अज़ कम 12 इस्लामी भाई, अव्वल ता आख़िर शिर्कत)

हर छोटे बड़े शहर में (मुतअ़ल्लिक़ा रुकने शूरा या निगराने काबीनात की इजाज़त से) नमाज़े मग़रिब ता इशराक़ व चाश्त **हफ़्तावार इजतिमाअ़** किया जाता है।

मदनी फूल : जिस नमाज़ के बा'द इजतिमाअ़ होता है, वोह नमाज़ इजतिमाअ़ वाली मस्जिद में बा जमाअ़त अदा की जाए, हर ज़ैली ह़ल्क़े से कम अज़ कम 12 इस्लामी भाई ज़रूर अव्वल ता आख़िर या'नी तिलावते क़ुरआने करीम से ले कर इजतिमाअ़, रात ए'तिकाफ़, तहज्जुद, फ़ज्र और इशराक़ व चाश्त वग़ैरा तक शिर्कत करें।

ज़िम्मेदारान इजतिमाअ़ में किस त़रह़ शिर्कत करें ?

ज़िम्मेदारान हफ़्तावार इजतिमाअ़ में जब शिर्कत फ़रमाएं तो दर्जे ज़ैल बातें पेशे नज़र रखें :

- ☞ अपने ज़ैली ह़ल्क़ों से इस्लामी भाइयों को साथ ले कर आएं।
- ☞ ए'तिकाफ़ की निय्यत से पूरी रात फ़ैज़ाने मदीना / इजतिमाअ़ वाली मस्जिद में बसर करने के लिये मौसिम के लिह़ाज़ से चादर या लिह़ाफ़ वग़ैरा की तरकीब भी बनाएं।
- ☞ नए इस्लामी भाइयों को तोह़फ़े में देने के लिये ह़स्बे तौफ़ीक़

www.dawateislami.net

कुछ न कुछ रसाइल भी अपने साथ लाएं (येह रसाइल मदनी बेग में हों तो मदीना मदीना, नहीं तो जेबी साइज़ रसाइल जेब में डाल कर लाएं)

❁ ☞ अपना खाना साथ लाएं और इजतिमाअ़ के बा'द अपने अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों के साथ ही खाने की तरकीब करें। (इस्लामी भाइयों को भी अपने साथ खाना लाने की तरग़ीब दिलाएं)

❁ ☞ इजतिमाअ़ के बा'द नए आने वाले इस्लामी भाइयों से आगे बढ़ कर पुर तपाक त़रीक़े से मुलाक़ात व इनफ़िरादी कोशिश कर के मदनी क़ाफ़िले के लिये तय्यार करें और अपने पास नाम व फ़ोन नम्बर लिख कर बा'द में राबित़ा भी करें और मौक़अ़ की मुनासबत से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद / त़ालिब बनने की तरग़ीब दिलाएं।

हफ़्तावार इजतिमाअ़ को मज़बूत करने के मदनी फूल

❁ ☞ निगराने काबीना / निगराने डिवीज़न मुशावरत, इजतिमाअ़ गाह के क़रीब रहने वाले इस्लामी भाइयों का माहाना मदनी मश्वरा करें।

❁ ☞ जो गाड़ियां ले कर आते हैं, उन के मदनी मश्वरे भी करते रहें।

❁ ☞ हफ़्तावार इजतिमाअ़ की मजालिस और इन के ज़िम्मेदार बनाए जाएं और वक़्तन फ़ वक़्तन उन के मदनी मशवरे होते रहें।

❁ ☞ ज़िम्मेदारान जदवल में जुमा'रात अ़स्र ता जुमुआ़ इश्राक़ व चाश्त इजतिमाअ़ वाली मस्जिद के लिये मुख़्तस कर दें।

❁ ☞ ख़ुद भी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करें और दूसरों को भी सफ़र करवाएं।

❁ ☞ मजलिसे हफ़्तावार इजतिमाअ़ ऐसे अच्छे मुबल्लिग़, क़ारी व ना'त ख़्वान का जदवल बनाए जो मदनी मर्कज़ के मदनी उसूलों के पाबन्द हों।

www.dawateislami.net

❁ ☞ हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शुरका की ता'दाद कम हो जाना बहुत बड़ा तन्ज़ीमी नुक़्सान है, लिहाज़ा इजतिमाअ़ के शुरका की ता'दाद को बर क़रार रखने के लिये मुसलसल कोशिश जारी रखें।

❁ ☞ हफ़्तावार इजतिमाअ़ के मक़ामात बढ़ाने से ज़ियादा लोग मुस्तफ़ीज़ होंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

❁ ☞ निगराने डिवीज़न मुशावरत / निगराने काबीना और निगराने काबीनात, मजलिसे जामिअ़तुल मदीना व मजलिसे मद्रसतुल मदीना, हफ़्तावार इजतिमाअ़ में जामिअ़तुल मदीना और मद्रसतुल मदीना के त़लबा की शिर्कत को यक़ीनी बनाएं, नीज़ इन के सरपरस्त साहिबान को भी इजतिमाअ़ में शामिल करवाएं।

❁ ☞ इजतिमाअ़ जदवल के मुत़ाबिक़ बा'दे मग़रिब से 2 घन्टे ही हो। इस में एक हिक्मत येह भी है कि डॉक्टर्ज़, शो'बए ता'लीम, मुलाज़िम पेशा अफ़राद वग़ैरा को सहूलत हो और उन की इजतिमाअ़ में ज़ियादा से ज़ियादा शिर्कत हो।

जो पाबन्द है इजतिमाआ़त का भी

मैं देता हूं उस को दुआए मदीना (1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 369

www.dawateislami.net

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का जदवल

1	अज़ाने मग़रिब	तीन मिनट	03 मिनट
2	नमाज़े मग़रिब मअ़ अव्वाबीन	बीस मिनट	20 मिनट
3	तिलावत सूरए मुल्क मअ़ निय्यतें	सात मिनट	07 मिनट
4	ना'त शरीफ़ मअ़ निय्यतें	पांच मिनट	05 मिनट
5	सुन्नतों भरा बयान	पचास मिनट	50 मिनट
6	सुन्नतें व आदाब मअ़ 6 दुरूदे पाक + 2 दुआएं	दस मिनट	10 मिनट
7	ए'लानात	पांच मिनट	05 मिनट
8	ज़िक्रुल्लाह	पांच मिनट	05 मिनट
9	दुआ़	दस मिनट	10 मिनट
10	सलातो सलाम व इख़्तितामे मजलिस की दुआ़	पांच मिनट	05 मिनट
	कुल दौरानिय्या	**2 घन्टे**	**120 मिनट**

सुन्नतों की लूटना जा के मताअ़

हो जहां भी सुन्नतों का इजतिमाअ़ [1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ यौमे ता'तील ए'तिकाफ़

(अत़राफ़ / गाऊं, हदफ़ : फ़ी ह़ल्क़ा शुरका कम अज़ कम 5 इस्लामी भाई)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ए'तिकाफ़ की निय्यत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये मस्जिद में ठहरे रहना

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 715

www.dawateislami.net

भी एक अ़ज़ीम इ़बादत है, लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के मदनी माहौ़ल में अत़राफ़े शहर के लोगों को दा'वते इस्लामी के मदनी माहौ़ल से वाबस्ता करने के लिये बरोज़ जुमुआ़ या इतवार बा'दे फ़ज्र ता नमाज़े जुमुआ़ या ह़स्बे मौक़अ़ अ़स्र ता मग़रिब **ए'तिकाफ़** की तरकीब बनाई जाती है।

यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ के मदनी फूल

❁ ☞ अ़लाक़ों से जो इस्लामी भाई अत़राफ़ / गाऊं में **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** के लिये जाते हैं, उन के साथ जामिअ़तुल मदीना के त़लबए किराम को भी तन्ज़ीमी तरबिय्यत के लिये भेजा जाए।

❁ ☞ जामिअ़तुल मदीना से जो त़लबए किराम नमाज़े फ़ज्र के बा'द किसी गाऊं में जाएं तो उन के साथ किसी उस्ताज़ साहिब की भी तरकीब हो।

❁ ☞ अव्वलन सुन्नतें और दुआ़एं सीखने सिखाने के ह़ल्क़े लगाए जाएं।

❁ ☞ नमाज़े जुमुआ़ से पहले अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की तरकीब हो।

❁ ☞ नमाज़े जुमुआ़ के बा'द मक़ामी लोगों के दरमियान मदनी ह़ल्क़ा और बा'दे अ़स्र बयान के बा'द वापसी की तरकीब हो।

❁ ☞ जहां इतवार को छुट्टी होती है वहां यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ की तरकीब इतवार के दिन इस त़रह़ बनाई जाए कि अ़स्र से पहले अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत और अ़स्र के बा'द बयान की तरकीब कर ली जाए।

❁ ☞ हफ़्तावार छुट्टी के दिन बिल ख़ुसूस असातिज़ा, त़लबा और नोकरी पेशा अफ़राद के लिये सीखने सिखाने का तरबिय्यती ह़ल्क़ा भी लगाया जा सकता है, जिस में नमाज़ के अह़काम से नमाज़ व

www.dawateislami.net

त़हारत के मसाइल और नमाज़ के अज़्कार, सुन्नतें और आदाब नीज़ दुआएं सिखाई जाएं।

मदीना : त़लबए किराम जहां भी जाएं तो उन्हें मदनी क़ाफ़िले की सूरत में भेजा जाए।

मदनी फूल : हर हफ़्ते छुट्टी के दिन, हर निगराने ह़ल्क़ा मुशावरत, निगराने अ़लाक़ा / शहर मुशावरत के मश्वरे से शहर के अत़राफ़ या किसी गाऊं में जुमुआ़ ता अ़स्र या अ़स्र ता मग़रिब ए'तिकाफ़ की तरकीब बनाए।

मदीना : अत़राफ़ से मुराद अत़राफ़ के गाऊं और देहातों के इ़लावा शहर के नए और कमज़ोर अ़लाक़े भी हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿8﴾ हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़क़ाइदो आ'माल, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ो सीरत, त़िबाबतो रूह़ानिय्यत वग़ैरा मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर सुवालात (Questions) किये जाते हैं और आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन के जवाबात (Answers) अ़त़ा फ़रमाते हैं। इस को दा'वते इस्लामी की इस्त़िलाह़ में **मदनी मुज़ाकरा** कहा जाता है और बरोज़ हफ़्ता (Saturday) बा'द नमाज़े इ़शा होने वाले मदनी मुज़ाकरे को **हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** का नाम दिया गया है।

मदनी फूल : ज़ैली ह़ल्क़े के इस्लामी भाई डिवीज़न सत़ह़ पर जामिअ़तुल मदीना / मद्रसतुल मदीना / फ़ैज़ाने मदीना (ख़ारिजे मस्जिद) में हर हफ़्ते इजतिमाई त़ौर पर मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत करें या निगराने काबीना के मश्वरे से किसी एक मक़ाम का तअ़य्युन कर लें।

www.dawateislami.net

जहां बराहे रास्त होने वाले मदनी मुज़ाकरे में वक़्त के फ़र्क़ की वज्ह से इस्लामी भाइयों की इजतिमाई शिर्कत न हो सके, वहां अगले दिन मदनी चैनल पर नश्रे मुक़र्रर चलने वाले मदनी मुज़ाकरे में इजतिमाई तौ़र पर शिर्कत करें या हल्क़ा सत्ह पर VCD इजतिमाअ़ का इन्तिज़ाम किया जाए, जिस में मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाली कोई भी VCD चलाई जाए।

﴾9﴿ हफ़्तावार मदनी हल्क़ा

मुख़्तलिफ़ ज़बान बोलने वालों नीज़ शख़्सिय्यात और ताजिरान के लिये अ़लाक़ाई सत्ह पर हफ़्तावार मदनी हल्क़े की तरकीब बनाई जाती है, नीज़ छोटे शहरों में या ऐसे मक़ामात जहां किसी वज्ह से हफ़्तावार इजतिमाअ़ अभी शुरूअ़ नहीं हो पाया हफ़्तावार मदनी हल्क़ा या मस्जिद इजतिमाअ़ की तरकीब होती है।

हफ़्तावार मदनी हल्क़े के जदवल में तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरे बयान, दुआ़ और दुरूदो सलाम शामिल है। किसी भी शहर / अ़लाक़े में एक से ज़ाइद हफ़्तावार मदनी हल्क़े अलग अलग दिनों और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर लगाए जा सकते हैं।

﴾10﴿ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत

(**हदफ़ :** शुरका कम अज़ कम 4 इस्लामी भाई)

मर्कज़ी मजलिसे शूरा की त़रफ़ से दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ हफ़्ते में एक दिन हर मस्जिद के अत़राफ़ में घर घर, दुकान दुकान जा कर घरों और दुकानों में मौजूद, बलकि राह में खड़े हुवे और आने जाने वाले तमाम अफ़राद को नेकी की दा'वत पेश की जाती है, इसे **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** कहा जाता है।

www.dawateislami.net

करम से "नेकी की दा'वत" का ख़ूब जज़्बा दे
दूं धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत हक़ीक़त में दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्ति'माल होने वाली एक ख़ास इस्तिलाह है जिस से मुराद اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر है और इस के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف हर शख़्स पर उस के मन्सब (Status) के हवाले से और हस्बे इस्तिताअ़त वाजिब है, इस पर कुरआनो सुन्नत नातिक़ है और इजमाए उम्मत भी है। اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف हुक्मरानों, उलमा व मशाइख़ बल्कि हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है, इसे सिर्फ़ एक तबक़े तक महदूद कर देना सहीह नहीं और हक़ीक़त येह है कि अगर हर शख़्स इस को अपनी ज़िम्मेदारी समझे तो मुआशरा नेकियों का गहवारा बन सकता है।(2) बुराई को बदलने के लिये हर तबक़े को उस की ताक़त के मुताबिक़ ज़िम्मेदारी सोंपी गई, क्यूंकि इस्लाम में किसी भी इन्सान को उस की ताक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं दी जाती । अरबाबे इक्तिदार, असातिज़ा (Teachers) वालिदैन (Parents) वग़ैरा जो अपने मा तहतों को कन्ट्रोल (Control) कर सकते हैं वोह क़ानून (Law) पर सख़्ती से

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 77
2 ..... मिरआतुल मनाजीह, नेक बातों का हुक्म देना, पहली फ़स्ल, 6/502

www.dawateislami.net

अ़मल करा के और मुख़ालफ़त की सूरत में सज़ा दे कर बुराई का ख़ातिमा कर सकते हैं । मुबल्लिग़ीने इस्लाम, उ़लमा व मशाइख़, अदीब व सिहाफ़ी (Journalists) और दीगर ज़राइए़ इब्लाग़ (Means of communication) मसलन रेडियो (Radio) और टी वी वग़ैरा से सभी लोग अपनी तक़रीरों तह़रीरों बल्कि शो'रा (Poets) अपनी नज़्मों (Poems) के ज़रीए़ बुराई का क़ल्अ़ क़म्अ़ करें और नेकी को फ़रोग़ दें, बिलिसानिही (या'नी ज़बान से नेकी की दा'वत पेश करने) के तह़त येह तमाम सूरतें आती हैं और आ़म मुसलमान जिसे इक़्तिदार की कोई सूरत भी ह़ासिल नहीं और न ही वोह तह़रीर व तक़रीर के ज़रीए़ बुराई का ख़ातिमा कर सकता है वोह दिल से उस बुराई को बुरा समझे अगर्चे येह ईमान का कमज़ोर तरीन मर्तबा है क्यूंकि कोशिश कर के ज़बान से रोकना चाहिये लेकिन दिल से जब बुरा समझेगा तो यक़ीनन ख़ुद बुराई के क़रीब नहीं जाएगा और इस त़रह़ मुआ़शरे (Society) के बे शुमार अफ़राद ख़ुद ब ख़ुद राहे रास्त पर आ जाएंगे ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला शुबा इ़ल्मे दीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीरास है, जिस के हुसूल के लिये हर एक को कोशिश करनी चाहिये । जैसा कि मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बाज़ार में तशरीफ़ लाए और लोगों से इरशाद फ़रमाया : लोगो ! मैं

1 ..... मिरआतुल मनाजीह, नेक बातों का हुक्म देना, पहली फ़स्ल, 6/503

www.dawateislami.net

तुम्हें यहां देख रहा हूं हालांकि वहां ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीरास तक़्सीम हो रही है। तुम जा कर अपना हिस्सा क्यूं वुसूल नहीं करते ? येह सुन कर लोगों ने पूछा कि कहां मीरास तक़्सीम हो रही है ? तो आप ने फ़रमाया : मस्जिद में। वोह जल्दी जल्दी मस्जिद की त़रफ़ चल दिये, मगर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वहीं रुके रहे, वापस आ कर उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम ने तो वहां कोई मीरास तक़्सीम होते नहीं देखी। दरयाफ़्त फ़रमाया : फिर तुम ने क्या देखा ? अ़र्ज़ की : हम ने देखा कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं तो कुछ तिलावत कर रहे हैं और कुछ इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर रहे हैं। इस पर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : येही तो दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीरास है।[1]

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत : दा'वते इस्लामी का जो बड़े से बड़ा ज़िम्मेदार **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** में अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा शिर्कत नहीं करता, वोह मेरे नज़्दीक सख़्त ग़ैर ज़िम्मेदारी का मुर्तकिब है। (जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है) हफ़्ते में एक दिन मख़्सूस कर के अपने ज़ैली ह़ल्क़े (मस्जिद और इस के अत़राफ़) में घर घर, दुकान दुकान जा कर नेकी की दा'वत ज़रूर दें। (रिहाइशी अ़लाक़ों में अ़स्र ता मग़रिब या मग़रिब ता इ़शा, कारोबारी मराकिज़ में ज़ोहर या अ़स्र से पहले) अगर आप अकेले हैं तो वादिये

[1] ..... معجم اوسط، ۱/ ۳۹۰، حدیث: ۱۴۲۹

www.dawateislami.net

मिना में तन्हा ख़ैमा ख़ैमा जा कर नेकी की दा'वत देने वाले मक्की मदनी महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद करें।

दुआए अत्तार

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए
मैं देता हूं उस को दुआए मदीना (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहाना दो मदनी काम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा इस मदनी मक़्सद को अपना लें कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ

चुनान्चे, इस मदनी मक़्सद के ह़ुसूल का जो आसान तरीन रास्ता है, उस के लिये दर्जे ज़ैल माहाना दो मदनी काम ज़रूरी हैं :

﴾11﴿ मदनी क़ाफ़िला

(**माहाना हदफ़ :** फ़ी ह़ल्क़ा 12 इस्लामी भाई तीन दिन के लिये)

सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनना बेह़द ज़रूरी है। क्यूंकि सारी दुन्या में नेकी की दा'वत

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 369

www.dawateislami.net

मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन कर भी आ़म की जा सकती है। ख़ुद हमारे मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने राहे ख़ुदा में मुतअ़द्दिद सफ़र किये, जिन के दौरान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बहुत सी तकालीफ़ का सामना किया, मुसीबतें झेलीं, त़ा'ने सुने, ज़ख़्म सहे, पथ्थर खाए, फ़ाक़ों के सबब पेट पर पथ्थर बान्धे, लेकिन फिर भी रातों को उठ उठ कर, रो रो कर लोगों की हिदायत के लिये दुआ़एं कीं और लोगों के पास जा जा कर इस्लाम की दा'वत को आ़म किया। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अक्सरिय्यत ऐसी थी, जिन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया, फिर इसे सारी दुन्या में फैलाने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार किया। येही वज्ह है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मज़ारात सिर्फ़ मदीनए त़य्यिबा ही में नहीं, बल्कि दुन्या के मुतअ़द्दिद मक़ामात पर भी मौजूद हैं। इन के बा'द ताबेईन, तबए़ ताबेईन[1] अइम्मए उ़ज़्ज़ाम और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने नेकी की दा'वत को आ़म करने के इस सिलसिले को जिस आबो ताब के साथ क़ाइम रखा, वोह तारीख़ (History) जानने वालों से मख़्फ़ी नहीं। चुनान्चे, अकाबिरीने इस्लाम के

[1] ..... हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के वोह मुसलमान जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोह़बत में रहे, उन्हें ताबेईन कहा जाता है और वोह मुसलमान जो इन ताबेईन की सोह़बत में रहे, वोह तबए़ ताबेईन कहलाते हैं। उम्मते मुह़म्मदिय्या में सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द तमाम उम्मत से ताबेईन अफ़्ज़ल व बेहतर हैं और इन के बा'द तबए़ ताबेईन का मर्तबा है।

(हमारा इस्लाम, हिस्सए चहारुम, बाबे अव्वल, स. 102)

www.dawateislami.net

नक़्शे क़दम पर चलते हुवे शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुसलमानों की इस्लाह़ के लिये शबो रोज़ कोशिश की, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हर इस्लामी भाई को ख़ुसूसी त़ौर पर मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाते रहते हैं, अगर हर इस्लामी भाई इनफ़िरादी कोशिश करने वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुवे रोज़ाना दो इस्लामी भाइयों को मदनी क़ाफ़िले की दा'वत दे तो महीने भर में 60 इस्लामी भाई हुवे, 12 फ़ीसद कामयाबी भी ह़ासिल हो तो हर ज़ैली ह़ल्क़े से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िला तय्यार हो सकता है और इस मदनी काम की बरकत से पूरी दुन्या में दा'वते इस्लामी की न सिर्फ़ धूम मच जाएगी बल्कि कुछ ही अ़र्से में दा'वते इस्लामी का येह पैग़ाम हर मुल्क, हर सूबे, हर शहर, हर गाऊं (Village) हर मह़ल्ले और हर घर में पहुंच जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

हर माह मदनी क़ाफ़िले में सब करें सफ़र

अल्लाह ! जज़्बा कर अ़त़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा (1)

मदनी क़ाफ़िलों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी क़ाफ़िलों की अहम्मिय्यत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

﴾1﴿ ☞ दा'वते इस्लामी की बक़ा मदनी क़ाफ़िलों में है।

﴾2﴿ ☞ मदनी क़ाफ़िले दा'वते इस्लामी के लिये रीढ़ की हड्डी की हैसिय्यत रखते हैं।

1 .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 131

www.dawateislami.net

﴾3﴿ ☞ मेरा पसन्दीदा इस्लामी भाई वोह है जो लाख सुस्त हो, मगर तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करता हो, जो दाढ़ी और ज़ुल्फ़ों से आरास्ता और सुन्नत के मुताबिक़ मदनी लिबास व इमामा शरीफ़ से मुज़य्यन हो। मुझे कमाउ बेटे पसन्द हैं। (या'नी जो मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हों)

﴾4﴿ ☞ तमाम इस्लामी भाइयों को बस येही धुन होनी चाहिये कि जिस त़रह़ भी बन पड़े हम लोगों को मदनी क़ाफ़िलों के लिये तय्यार करें।

﴾5﴿ ☞ हमारी मंज़िल मदनी क़ाफ़िलों के ज़रीए़ पूरी दुन्या में सुन्नतों की बहारें आ़म करना है।

﴾6﴿ ☞ दुन्यावी या तन्ज़ीमी काम में चाहे जितनी भी मसरुफ़िय्यत हो, जब तक कोई मानेए़ शरई न हो हर माह 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये।

﴾7﴿ ☞ इधर उधर की बातों के बजाए मदनी क़ाफ़िलों ही की बातें कीजिये, आप का ओढ़ना बिछौना बस **मदनी क़ाफ़िला, मदनी क़ाफ़िला, मदनी क़ाफ़िला, मदनी क़ाफ़िला, मदनी क़ाफ़िला** हो।

जाइये नेकी की दा'वत दीजिये जा जा के घर
कीजिये हर माह मदनी क़ाफ़िलों में भी सफ़र (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 699

www.dawateislami.net

दुआए अत्तार

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हर माह 3 दिन, हर 12 माह में यकमुश्त एक माह और उम्र भर में यकमुश्त 12 माह के लिये तेरी राह में सफ़र करने की तड़प रखने वालों को और उन के सदक़े मुझे भी बे हिसाब बख़्श दे ।

सफ़र जो करे क़ाफ़िलों में मुसलसल
मैं देता हूं उस को दुआए मदीना (1)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी इनआमात

(**हदफ़ :** फ़ी ज़ैली हल्क़ा 12 इस्लामी भाई)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन दौर में नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़तो त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ 72 मदनी इन्आ़मात ब सूरते सुवालात (Questions) अ़त़ा फ़रमाया है । चुनान्चे, अपनी इस्लाह़ के लिये ख़ुद भी इन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये और इनफ़िरादी कोशिश करने वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल के ज़रीए हर माह मदनी इन्आ़मात के कम अज़ कम 26 रसाइल तक़्सीम कर के वुसूल फ़रमाने की भी कोशिश कीजिये ।

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 369

www.dawateislami.net

मदनी इन्आ़मात के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी इन्आ़मात की अहम्मिय्यत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

❁ ☞ जब मुझे मा'लूम होता है कि फुलां इस्लामी भाई या इस्लामी बहन का मदनी इन्आ़मात पर अ़मल है तो दिल बाग़ बाग़ बल्कि बागे़ मदीना हो जाता है। या सुनता हूं कि फुलां ने ज़बान और आंखों का या इन में से किसी एक का कुफ़्ले मदीना लगाया है तो अ़जीब कैफ़े सुरूर ह़ासिल होता है।

❁ ☞ जो कोई मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ इख़्लास के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करेगा तो वोह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का प्यारा बन जाएगा।

❁ ☞ मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना चूंकि दुन्या व आख़िरत के बे शुमार फ़वाइद पर मुश्तमिल है, लिहाज़ा शैत़ान इस बात की भरपूर कोशिश करेगा कि आप को इस्तिक़ामत न मिले, मगर आप हिम्मत न हारें और मेहरबानी फ़रमा कर दूसरे इस्लामी भाइयों को भी मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की तरग़ीब दिलाते रहें, दो या एक बार कहने से अगर कोई अ़मल न करे तो मायूस न हो जाया करें, बल्कि मुसलसल कहते रहें। कानों में बार बार पड़ने वाली बात कभी न कभी दिल में भी उतर ही जाएगी। याद रखें अगर एक भी इस्लामी भाई ने आप के समझाने पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया तो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के लिये सवाबे जारिया हो जाएगा, आप को सुकूने

www.dawateislami.net

क़ल्ब ह़ासिल होगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के अ़लाक़े में कुरआनो सुन्नत का मदनी काम न सिर्फ़ चलेगा बल्कि दौड़ेगा, नहीं नहीं उस के तो पर लग जाएंगे और बे साख़्ता मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ उड़ना शुरूअ़ कर देगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में आप का बेड़ा पार होगा।

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल
मदनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाच रंग और शराब का आ़दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतें अपनाने और अपना सीना इ़श्क़े रसूल का मदीना बनाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सदा बहार मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। तरग़ीब के लिये एक ख़ुश गवार व मुश्कबार मदनी बहार पेशे ख़िदमत है : एक इस्लामी भाई का तह़रीरी बयान बित्तसर्रुफ़ पेशे ख़िदमत है : मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मैं न सिर्फ़ गुनाहों के दलदल में निहायत बुरी त़रह़ फंसा हुवा था बल्कि मेरे अ़क़ाइद भी दुरुस्त न थे। नमाज़ों से इस क़दर ग़ाफ़िल था कि ईद की नमाज़ पढ़ना भी नसीब न होती। रमज़ानुल मुबारक में तमाम मुसलमान रोज़ा रखते मगर बद क़िस्मती से मैं इस सआ़दत से मह़रूम था। दिन में मुलाज़मत करता और रात

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 635

www.dawateislami.net

भर चरस और शराब के नशे में धुत रहता। टीवी पर फ़िल्में ड्रामे देखता और बद निगाही कर के अपने नामए आ'माल में गुनाहों के बोझ में इज़ाफ़ा करता। शादियों में नाच गाने का शौक़ीन था। ज़ुल्मते इस्यां (गुनाहों की तारीकी) से निकलने का सबब येह हुवा कि हमारी दुकान के सामने चन्द इस्लामी भाई फ़ैज़ाने सुन्नत से चौक दर्स दिया करते थे। कभी कभार मैं भी रस्मी तौर पर उस में शिर्कत कर लेता था। वोह बार बार मुझे हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत देते मगर मैं हर बार कोई न कोई बहाना बना लेता। एक रोज़ उन की मिन्नतो समाजत पर मैं ने इजतिमाअ़ में शिर्कत की हामी भर ली और इजतिमाअ़ में हाज़िर हो गया। जब वहां पहुंचा तो इजतिमाअ़ में होने वाले बयान, ज़िक्र, ना'त, और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने इस क़दर मुतअस्सिर किया कि मेरी ज़िन्दगी यकसर बदल गई। चरस, शराब नोशी और नाच गानों से तौबा कर ली, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी माहोल की बरकत से पांचों नमाज़ें मस्जिद में अदा करने वाला बन गया। मुझ जैसे गुनाहों में लिथड़े हुवे शख़्स ने मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से दीन के अहम मसाइल भी सीख लिये और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत (दाढ़ी शरीफ़) भी सजा ली। मदनी माहोल की बरकत से मेरे बुरे अ़क़ीदे की भी इस्लाह़ हो गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ चौक दर्स और मदनी क़ाफ़िले की बरकत से मुझ जैसा नाच रंग का दिलदादह और चरस और शराब का आ़दी सुन्नतों का पैकर बन गया। ता दमे तह़रीर अत़राफ़ गाऊं और ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों में मदनी कामों की धूमें मचा रहा हूं।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अपनाए जो सदा के लिये "सुन्नते नबी"

मेरी दुआ है ख़ुल्द में जाए नबी के साथ

इस्लामी भाई "दा'वते इस्लामी" का सदा

तुम मदनी काम करते रहो तन दही के साथ

सरकार ह़ाज़िरी हो मदीने की बार बार

अ़त्तार की है अ़र्ज़ बड़ी आ़जिज़ी के साथ (1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घर में मदनी माहोल बनाने के लिये

घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों का सिलसिला हो और आप अगर सरपरस्त नहीं हैं नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के बजाए सब को नर्मी के साथ मक्तबतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ऑडियो, विडियो केसिटें सुनाइये, मदनी चेनल दिखाइये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मदनी नताइज बर आमद होंगे ।

1 ..... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 211

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मुस्तक़िल हफ़्तावार जदवल

(बराए निगराने हल्क़ा मुशावरत)

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه : जो येह चाहता है कि मैं उस से महब्बत करूं तो उसे चाहिये कि दा'वते इस्लामी का **मदनी काम** करे।[1]

नाम हल्क़ा :.....	नाम शहर / अ़लाक़ा :.....	डिवीज़न :.....
नाम निगराने हल्क़ा मुशावरत :.....	निगराने शहर / अ़लाक़ा मुशावरत :.....	
निगराने डिवीज़न मुशावरत :.....	नाम काबीना / काबीनात :.....	
नाम निगराने काबीना :		

ज़ैली हल्क़ा नम्बर	दिन	नाम मस्जिद (ज़ैली हल्क़ा मस्जिद के अ़लावा हो तो यहां उस का नाम लिख दीजिये)	ज़ैली हल्क़े में हाज़िरी का वक़्त / नमाज़
1	जुमुआ़		
2	हफ़्ता (बा'दे इ़शा हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा)		
3	इतवार		
4	पीर		
5	मंगल		
6	बुध		
7	जुमा'रात हफ़्तावार इजतिमाअ़ (मग़रिब ता इशराक़ चाश्त)		

हल्क़ा निगरान, निगराने शहर/अ़लाक़ा मुशावरत से मश्वरा कर के एक ही बार येह जदवल बना लें ज़रूरतन तरमीम भी निगराने शहर / अ़लाक़ा मुशावरत से मश्वरा कर के करें।

★★★

1 .....मदनी मुज़ाकरा नम्बर, 150

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नाम मुबल्लिग़ :.....	**माहाना जदवल**	ज़िम्मेदारी :.....

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه : जो येह चाहता है कि मैं उस से महब्बत करूं तो उसे चाहिये कि दा'वते इस्लामी का **मदनी काम** करे।[1]

नाम काबीना व काबीनात :.....	मदनी माह व सिन :.....	ईसवी माह व सिन :.....

मदनी	ईसवी	दिन	मक़ाम	वक़्त	पेशगी जदवल / मसरूफ़िय्यत की नौइय्यत	कारकर्दगी जदवल
1						
2						
3						
4						
5						
6						
7						
8						
9						
10						

1 ..... मदनी मुज़ाकरा नम्बर, 150

www.dawateislami.net

11						
12						
13						
14						
15						
16						
17						
18						
19						
20						
21						
22						
23						
24						
25						
26						
27						
28						
29						
30						

www.dawateislami.net

❁ **निगराने काबीना के लिये :** काबीना का माहाना मदनी मश्वरा किस तारीख़ पर हुवा ?.....कुल अराकीने काबीना :.... कितने मदनी मश्वरे में ह़ाज़िर हुवे ?.... कुल डिवीज़न :.... कितने डिवीज़नों में ह़ाज़िरी हुई ?....कितने डिवीज़नों के मदनी मश्वरे किये ?....

❁ **निगराने डिवीज़न मुशावरत के लिये :** डिवीज़न का माहाना मदनी मश्वरा किस तारीख़ पर हुवा ?....कुल अराकीने डिवीज़न मुशावरत :....कितने मदनी मश्वरे में ह़ाज़िर हुवे ?.... कुल ह़ल्क़े :.... कितने ह़ल्कों में मदनी मश्वरे किये ?....

❁ **शो 'बा ज़िम्मेदार के लिये :** शो'बे का माहाना मदनी मश्वरा किस तारीख़ पर हुवा ?....कुल ज़िम्मेदारान/मदनी मश्वरे में कितने आए ?..../....

❁ **निगराने अ़लाक़ाई मुशावरत के लिये :** अ़लाक़े का माहाना मदनी मश्वरा किस तारीख़ पर हुवा ?....कुल अराकीने अ़लाक़ाई मुशावरत :....कितने माहाना मदनी मश्वरे में ह़ाज़िर हुवे ?....कुल ज़ैली ह़ल्क़े :....कितने ज़ैली ह़ल्क़ों में ह़ाज़िरी हुई ?....दिनों की मुस्तक़िल मसरूफ़िय्यत : हफ़्ता (बा'दे इ़शा हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा), जुमा'रात (हफ़्तावार इजतिमाअ़ : मग़रिब ता इशराक़ चाश्त)

www.dawateislami.net

माहाना कारकर्दगी का ख़ुलासा

मदनी काम	कारकर्दगी	मदनी काम	कारकर्दगी	मदनी काम	कारकर्दगी
कितने मंगल तहरीरी काम किया ?		कितने दिन सदाए मदीना ?		बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े में शिर्कत ?	
कितने हफ़्तावार इजतिमाअ़ में बयानात किये ?		कितने डिवीज़नों के मदनी मश्वरे किये ?		शो'बाजात के कितने मदनी मश्वरे किये ?	
कितने हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की ?		काबीनात मदनी मश्वरे में शिर्कत ?		काबीना के मदनी मश्वरे में शिर्कत ?	
कितने मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत की ?		मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कितने दिन ?		कितने दिन फ़िक्रे मदीना की ?	
कितने जामिअ़तुल मदीना लिल बनीन में हाज़िरी ?		कितने मद्रसतुल मदीना लिल बनीन में हाज़िरी ?		कितने अत्राफ़/गाऊं में हाज़िरी ?	
कितने रसाइल पढ़े ?		कितने अ़लाक़ाई दौरा में शिर्कत की ?		कितने दिन 2 दर्स दिये / सुने ?	

❁ निगराने काबीनात / निगराने काबीना अपना पेशगी जदवल हर मदनी माह की (19 ता 26) और कारकर्दगी जदवल (यकुम ता 3) तक अपने मुतअ़ल्लिक़ा निगरान को (jadwal.karkrdagi@dawateislami.net) पर ई-मेल करें।

❁ रुक्ने काबीना और निगराने डिवीज़न मुशावरत पेशगी व कारकर्दगी जदवल काबीनात मक्तब में ई-मेल / पोस्ट करें।

जदवल बनाने की तारीख़ :..... जम्अ़ करवाने की तारीख़ :..... दस्तख़त :.....

www.dawateislami.net

तन्ज़ीमी इस्तिलाहात और मदनी माहोल में राइज दीगर अल्फ़ाज़

इस के बजाए	येह कहें	इस के बजाए	येह कहें
क़ाफ़िला	मदनी क़ाफ़िला	एक साल का क़ाफ़िला	12 माह का मदनी क़ाफ़िला
30 दिन का क़ाफ़िला	एक माह का मदनी क़ाफ़िला	निशस्त	मदनी हल्क़ा
कन्वेन्स करना	ज़ेहन बनाना / समझाना	ख़िताब/लेकचर	बयान
निकात	मदनी फूल	मीटिंग/मश्वरा	मदनी मश्वरा
इन्आमात	मदनी इन्आमात	मदनी इन्आमात का कार्ड	मदनी इन्आमात का रिसाला
काम	मदनी काम	माहोल	मदनी माहोल
हुल्या	मदनी हुल्या	तरबिय्यती कोर्स	मदनी तरबिय्यती कोर्स
12 रोज़ा कोर्स	12 रोज़ा मदनी कोर्स	गुलदस्ता	मदनी गुलदस्ता
चेनल	मदनी चेनल	पेड	मदनी पेड
तरबिय्यत	मदनी तरबिय्यत	तरबिय्यत गाह	मदनी तरबिय्यत गाह
मुज़ाकरा	मदनी मुज़ाकरा	टोपी बुर्क़अ	मदनी बुर्क़अ
स्टाफ़	मदनी अ़मला	मर्कज़	मदनी मर्कज़
चादर	मदनी चादर	स्टेज	मंच
शिड्यूल/टाइम टेबल	जदवल	रिपोर्ट	कारकर्दगी
टार्गेट	हदफ़	मेहनत करें	कोशिश करें
राबिता कमेटी	मजलिसे राबिता	वर्ल्ड शूरा	मर्कज़ी मजलिसे शूरा
इजतिमाअ़	सुन्नतों भरा इजतिमाअ़	ख़्वातीन का इजतिमाअ़	इस्लामी बहनों का इजतिमाअ़
इरादा	निय्यत	चौबीस	डबल 12
दफ़्तर, केम्प	मक्तब	हस्पताल	मुस्तश्फ़ा/क्लीनिक
फ़र्द, बन्दा, लड़का, भाई	इस्लामी भाई	औ़रत	इस्लामी बहन
اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف	नेकी की दा'वत	येह नतीजा निकलता है कि	येह मदनी फूल मिला कि
V.I.P	शख़्सिय्यत	प्रोग्राम	सिलसिला
नोकर	ख़ादिम	वक़्फ़	वक़्फ़े मदीना
आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया !	आप ने देखा !	ह़लीम	खिचड़ा
होल्ड करें	صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب	भूका रहना	पेट का कुफ़्ले मदीना लगाना
आंखों की हिफ़ाज़त करना	आंखों का कुफ़्ले मदीना लगाना	फ़ुज़ूल गोई और ग़ैर ज़रूरी बातों से बचना	ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाना
घर घर जा कर तब्लीग़ करना	घर घर जा कर नेकी की दा'वत देना	नमाज़ के लिये आवाज़ लगाना	सदाए मदीना लगाना
आ'ज़ा को गुनाहों व फ़ुज़ूलिय्यात से बचाना		कुफ़्ले मदीना लगाना	
मदनी माहोल से वाबस्तगी के बा'द तब्दीली आना		मदनी इन्क़िलाब	

www.dawateislami.net

मुल्कों व शहरों के तन्ज़ीमी नाम

इस के बजाए	येह कहें	इस के बजाए	येह कहें
सऊ़दी अ़रब	अ़रब शरीफ़	मानसरह	मदनी सह़रा
श्रीलंका	सीलंका	लाड़काना	फ़ारूक़ नगर
सिन्ध	बाबुल इस्लाम सिन्ध	फ़ैसलाबाद	सरदाराबाद
कराची	बाबुल मदीना कराची	सरगोधा	गुलज़ारे त़ैबा
इन्डिया / भारत	हिन्द	कोटरी	कोट अ़त्तारी
सियालकोट	ज़ियाकोट	एबटाबाद	रह़मतआबाद
लाहौर	मर्कजुल औलिया	नागपुर	ताजपुर
मुल्तान	मदीनतुल औलिया मुल्तान	हरीपुर	सब्ज़पुर
ह़ैदराबाद	ज़म ज़म नगर ह़ैदराबाद		

जामिअ़तुल मदीना और मद्रसतुल मदीना वग़ैरा की इस्तिलाह़ात

इस के बजाए	येह कहें	इस के बजाए	येह कहें
जामिआ़	जामिअ़तुल मदीना	मद्रसा	मद्रसतुल मदीना
इ़ल्मिय्या	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या	मक्तब	मक्तबतुल मदीना
मॉनीटर	दरजा ज़िम्मेदार	किचन	मत़बख़
इम्तिह़ान का रिज़ल्ट	नतीजए इम्तिह़ान	स्टोर	मख़्ज़न
जामिआ़ का टाइम टेबल	जामिअ़तुल मदीना का जदवल	फुल टाइम जामिअ़तुल मदीना	कुल वक़्ती जामिअ़तुल मदीना
एसम्बली हॉल	दुआ़ए मदीना हॉल	मुफ़्ती कोर्स	तख़स्सुस फ़िल फ़िक़ह
क्लास	दरजा	एसम्बली	दुआ़ए मदीना
चौकीदार	बव्वाब	ता'लीमी बोर्ड	मजलिसे ता'लीमी उमूर
सालाना छुट्टियां	सालाना ता'त़ीलात	मद्रसा ऑन लाइन	मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन
मद्रसा बालिग़ान		मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान	

www.dawateislami.net

रिश्ते

इस के बजाए	येह कहें	इस के बजाए	येह कहें
बीवी	बच्चों की अम्मी	साली	बच्चों की ख़ाला
शोहर	मन्सूब/बच्चों के अब्बू	सास	बच्चों की दादी/नानी
साला	बच्चों के मामूं	बहनोई	बच्चों के ख़ालू/फूफा
नन्द	बच्चों की फूफी	देवर	बच्चों के चचा
बच्चे / बच्चियां	मदनी मुने / मदनी मुनियां	सुसर	बच्चों के दादा / नाना
बच्चा / मुन्ना	मदनी मुन्ना	बच्ची / मुन्नी	मदनी मुन्नी

बाल बच्चों को सुन्नतों का पाबन्द बनाने के लिये

हर नमाज़ के बा'द येह दुआ अव्वलो आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में मदनी माहौल क़ाइम होगा। (दुआ येह है :)

(اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़गारों का पेश्वा बना।* (پ۱۹، الفرقان: ۷۴)

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	
.1	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
.2	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
.3	تفسیر البغوی	امام ابو محمد الحسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	پشاور ۱۴۳۱ھ
.4	صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۸ھ
.5	صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
.6	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۸ھ
.7	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
.8	المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
.9	المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الفکر عمان، ۱۴۲۰ھ
.10	المستدرک علی الصحیحین	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۳۷ھ
.11	حلیۃ الاولیاء	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۷ھ
.12	الطبقات الکبریٰ	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۱ھ
.13	نوادر الاصول	ابو عبد اللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۳ھ

www.dawateislami.net

.14	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
.15	منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار البشائر الاسلامیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ
.16	البدایۃ والنہایۃ	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۶ھ
.17	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت 2008ء
.18	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۸ھ
.19	ذوق نعت	مولانا حسن رضا خان قادری، متوفی ۱۳۳۶ھ	شیر برادرز، لاہور ۱۴۲۸ھ
.20	مراۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
.21	مراۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ لاہور
.22	ہمارا اسلام	مفتی محمد خلیل خان برکاتی، متوفی ۱۴۰۵	فرید بک سٹال، لاہور ۱۴۲۴ھ
.23	فیضان سنت	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
.24	مدنی پنج سورہ	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
.25	وسائل بخشش (مرمّم)	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
.26	شجرہ قادریہ رضویہ ضیائیہ عطاریہ	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
.27	نیک بننے اور بنانے کے طریقے	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
.28	فیضان فاروق اعظم	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
.29	مدنی مذاکرہ نمبر ۱۵۰	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	غیر مطبوعہ

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	﴾6﴿ हफ़्तावार इजतिमाअ़	41
नेकी की दा'वत का मदनी सफ़र	1	ज़िम्मेदारान इजतिमाअ़ में किस तरह शिर्कत करें ?	41
इनफ़िरादी कोशिश का नतीजा	4	हफ़्तावार इजतिमाअ़ को मज़बूत करने के मदनी फूल	42
दा'वते इस्लामी का मदनी सफ़र	6	हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का जदवल	44
दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब	9	﴾7﴿ यौमे ता'तील ए'तिकाफ़	44
ज़ैली हल्क़ा किसे कहते हैं ?	9	यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ के मदनी फूल	45
ज़ैली हल्क़े का मर्कज़	10	﴾8﴿ हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा	46
मसाजिद की आबादकारी की अहम्मिय्यत	11	﴾9﴿ हफ़्तावार मदनी हल्क़ा	47
दा'वते इस्लामी मस्जिद भरो		﴾10﴿ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत	47
तह़रीक है मगर कैसे ?	12	माहाना दो मदनी काम	51
बारह मदनी कामों की मुख़्तसर वज़ाहत	15	﴾11﴿ मदनी क़ाफ़िला	51
रोज़ाना के पांच मदनी काम	16	मदनी क़ाफ़िलों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत	53
﴾1﴿ सदाए मदीना	16	﴾12﴿ मदनी इन्आ़मात	55
सदाए मदीना के चन्द मदनी फूल	19	मदनी इन्आ़मात के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत	56
गली में सदाए मदीना का त़रीक़ा	21	नाच रंग और शराब का आ़दी	57
﴾2﴿ बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा	22	मुस्तक़िल हफ़्तावार जदवल	60
﴾3﴿ मस्जिद दर्स	24	माहाना जदवल	61
بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से		माहाना कारकर्दगी का खुलासा	64
मस्जिद दर्स के 19 मदनी फूल	26	तन्ज़ीमी इस्तिलाहात और मदनी माहोल में राइज	
मस्जिद में दर्स देने के मक़ासिद	29	दीगर अल्फ़ाज़	65
मदनी दर्स देने का त़रीक़ा	31	मुल्कों व शहरों के तन्ज़ीमी नाम	66
दर्स के आख़िर में इस तरह्		जामिअ़तुल मदीना और मद्रसतुल मदीना वग़ैरा	
तरग़ीब दिलाइये !	32	की इस्तिलाहात	66
﴾4﴿ मद्रसतुल मदीना बालिग़ान	36	रिश्ते	67
﴾5﴿ चौक दर्स	38	माख़िज़ो मराजेअ़	68
हफ़्तावार पांच मदनी काम	40	फ़ेहरिस्त	70

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-631-724-1
0125467
MC 1286

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net